

“अनासक्त बनने के लिए तन और मन को अमानत समझो”

बापदादा को कहाँ बुलाया है और किसलिये? अभी कहाँ बैठे हो? मधुबन में तो हो लेकिन मधुबन में भी कहाँ बाप आये हैं? फुलवारी में बैठे हो या महफिल में? बापदादा रूहानी रूहों को देख रहे हैं और साथ-साथ हरेक फूल से निकले हुए रूह की खुशबू भी ले रहे हैं। जैसे वह लोग फूलों से इसेन्स निकालते हैं, उनको रूह कहते हैं। उनकी खुशबू बहुत अच्छी और मीठी होती है। तो यहाँ मधुबन में रहते भी आज रूहानी दुनिया का सैर कर रहे हैं। आप सभी को भी रूहानी रूप में रहकर के हर कर्म करना है तब सर्विस में वा कर्म में रौनक आयेगी। अभी नवीनता चाहते हो ना वा जैसे चल रहे हैं उसमें सन्तुष्ट हो? नई रौनक तब आयेगी जब हर कर्म में, हर संकल्प में, वाणी में रूहानियत होगी। रूहानियत कैसे आयेगी? इसके लिये क्या करना है जो रूहानियत सदा कायम रहे? क्या बदलना है? (हरेक ने भिन्न-भिन्न बातें सुनाई) यह तो हैं मुख्य बातें जो सभी को पक्की ही हैं। परन्तु रूहानियत न रहने का कारण क्या है? वफादार, फरमानवरदार क्यों नहीं बन पाते हैं? इसकी बात है (सम्बन्ध की कमी) सम्बन्ध में कमी भी क्यों पड़ती है? निश्चयबुद्धि का तिलक तो सभी को लगा हुआ है। यह प्रश्न है कि रूहानियत सदा कायम क्यों नहीं रहती है? रूहानियत कायम न रहने का कारण यह है कि अपने को और दूसरों को जिनकी सर्विस के लिये निमित्त हैं, उन्हीं को बापदादा की अमानत समझकर नहीं चलते। जितना अपने को और दूसरों को अमानत समझेंगे तो रूहानियत आयेगी। अमानत न समझने से कुछ कमी पड़ जाती है। मन के संकल्प जो करते हैं वह भी ऐसे समझ करके करें कि यह मन भी एक अमानत है। इस अमानत में ख्यानत नहीं डालनी है। दूसरे शब्दों में आप औरों को ट्रस्टी कहकर समझाते हो ना। उन्हीं को ट्रस्टी कहते हो लेकिन अपने मन और तन को और जो कुछ भी निमित्त रूप में मिला है, चाहे जिज्ञासु हैं, सेन्टर है, वा स्थूल कोई भी वस्तु है लेकिन अमानत मात्र है। अमानत समझने से इतना ही अनासक्त होंगे, बुद्धि नहीं जायेगी। अनासक्त होने से ही रूहानियत आयेगी, इतने तक अपने को शमा पर मिटाना है। मिटाना तो है लेकिन कहाँ तक। यह मेरे संस्कार हैं, यह मेरे संस्कार शब्द भी मिट जाये। मेरे संस्कार फिर कहाँ से आये, मेरे संस्कारों के कारण ही यह बातें होती हैं। इतने तक मिटाना है जो कि नेचर भी बदल जाये। जब हरेक की नेचर बदले तब आप लोगों के अव्यक्ति पिक्चर्स बनेंगे। संगमयुग की सम्पूर्ण स्टेज के पिक्चर्स क्या हैं? फरिश्ते में क्या विशेषता होती है? एक तो बिल्कुल हल्कापन होता है। हल्कापन होने के कारण जैसी भी परिस्थिति हो वैसी अपनी स्थिति बना सकेंगे। जो भारी होते हैं, वह कैसी भी परिस्थिति में अपने को सैट नहीं कर सकेंगे। तो फरिश्तेपन की मुख्य विशेषता हुई कि वह सभी बातों में हल्के होंगे। संकल्पों में भी हल्के, वाणी में भी हल्के और कर्म करने में भी हल्के और सम्बन्ध में भी हल्के रहेंगे। इन चार बातों में हल्कापन है तो फरिश्ते की अवस्था है। अब देखना है कहाँ तक इन 4 बातों में हल्कापन है। जो हल्के होंगे वे एक सेकेण्ड में कोई भी आत्मा के संस्कारों को परख सकेंगे और जो भी परिस्थिति सामने आयेगी उनको एक सेकेण्ड में निर्णय कर सकेंगे। यह है फरिश्तेपन की परख। जब यह सभी गुण हर कर्म में प्रत्यक्ष दिखाई दें तो समझना अब सम्पूर्ण स्टेज नजदीक है। साकार रूप की सम्पूर्ण

स्टेज किन बातों में नजर आती थी? मुख्य बात तो अपने सम्पूर्ण स्टेज की आपे ही परख करनी है - इन बातों से। इस ग्रुप का मुख्य गुण कौनसा है? वह ग्रुप था यज्ञ स्नेही और यह ग्रुप है यज्ञ सहयोगी।

यज्ञ सहयोगी में तो सभी पास हैं। बाकी क्या करना है? ऐसी भी स्थिति होगी जो किसके मन में जो संकल्प उठेगा वह आपके पास पहले ही पहुंच जायेगा। बोलने सुनने की आवश्यकता नहीं। लेकिन यह तब होगा जब औरों के संकल्पों को रीड करने के लिये अपने संकल्पों के ऊपर फूल ब्रेक होगी। ब्रेक पावरफुल हो। अगर अपने संकल्पों को ही समेट नहीं सकेंगे तो दूसरों के संकल्पों को समझ कैसे सकेंगे। इसलिये सुनाया था कि संकल्पों का बिस्तर बन्द करते चलो। जितनी-जितनी संकल्पों को समेटने की शक्ति होगी उतना-उतना औरों के संकल्पों को समझने की भी शक्ति होगी। अपने संकल्पों के विस्तार में जाने के कारण अपने को ही नहीं समझ सकते हो तो दूसरों को क्या समझेंगे। इसलिये यह भी स्टेज नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार आती रहेगी, यह भी सम्पूर्ण स्टेज की परख है। कहाँ तक सम्पूर्ण स्टेज के नजदीक आये हैं। उनकी परख इन बातों से अपने आप ही करनी है।

यह आलराउण्डर ग्रुप है। आलराउण्डर का लक्ष्य क्या होता है? लक्षण हैं लेकिन जो लक्ष्य रखा है वह कुछ और आगे का रखना चाहिए। अब तक जो प्रैक्टिकल में है उस हिसाब से कौन से राजे गिने जायेंगे? अभी के सर्विस के साक्षात्कार प्रमाण कौन से राजे बनेंगे? पुरुषार्थ से पद तो स्पष्ट हो ही जाता है। भल सूर्यवंशी तो हैं लेकिन एक होते हैं विश्व के राजे, तो विश्व महाराजन् के साथ अपने राज्य के राजे भी होते हैं। अब बताओ आप कौनसे राजे हो? शुरू में कौन आयेगे? विश्व के महाराजन् बनना और विश्व महाराजन् के नजदीक सम्बन्धी बनना इसके लिए कौनसा साधन होता है? विश्व का कल्याण तो हो ही जायेगा। लेकिन विश्व के महाराजन् जो बनने वाले हैं, उन्हीं की अभी निशानी क्या होगी? यह भी ब्राह्मणों का विश्व है अर्थात् छोटा सा संसार है तो जो विश्व महाराजन् बनने हैं उन्हीं का इस विश्व अर्थात् ब्राह्मणकुल की हर आत्मा के साथ सम्बन्ध होगा। जो यहाँ इस छोटे से परिवार, सर्व के सम्बन्ध में आयेगे वह वहाँ विश्व के महाराजन बनेंगे। अब बताओ कौन से राजे बनेंगे? एक होते हैं जो स्वयं तख्त पर बैठेंगे और एक फिर ऐसे भी हैं जो तख्त नशीन बनने वालों के नजदीक सहयोगी होंगे। नजदीक सहयोगी भी होना है, तो उसके लिये भी अब क्या करना पड़ेगा? जो पूरा दैवी परिवार है, उन सर्व आत्माओं के किसी न किसी प्रकार से सहयोगी बनना पड़ेगा। एक होता है सारे कुल की सर्विस के निमित्त बनना और दूसरा होता है सिर्फ निमित्त बनना। लेकिन किसी न किसी प्रकार से सर्व के सहयोगी बनना। ऐसे ही फिर वहाँ उनके नजदीक के सहयोगी होंगे। तो अब अपने आप को देखो। विश्व महाराजन् बनेंगे ना? नम्बरवार विश्व महाराजन् कौन-कौन बनते हैं, वह भी दिन-प्रतिदिन प्रत्यक्ष देखते जायेंगे। ऐसे नहीं कि अभी नहीं बन सकते हैं। अभी भी जम्प दे सकते हैं। मेकप करने का अभी समय है, लेकिन थोड़ा समय है। समय थोड़ा है मेहनत विशेष करनी पड़ेगी। लेकिन मेकप कर सकते हो। विश्व के महाराजन् के संस्कार क्या होंगे? आज बापदादा विश्व के महाराजन् बनाने की पढ़ाई पढ़ाते हैं। उसके संस्कार क्या होंगे? जैसे बाप सर्व के स्नेही और सर्व उनके स्नेही। यह तो प्रैक्टिकल में देखा ना। ऐसे एक-एक के अन्दर से उनके प्रति स्नेह के फूल बरसेंगे। जब स्नेह के फूल यहाँ बरसेंगे तब इतने जड़ चित्रों पर भी फूल बरसेंगे। तो यहाँ भी अपने को देखो कि मुझ आत्मा के ऊपर कितने स्नेह के पुष्पों की वर्षा हो रही है। वह छिप नहीं सकेंगे। जितने स्नेह के पुष्प उतने द्वापर में पूजा के पुष्प चढ़ेंगे। कहाँ-कहाँ कोई पुष्प चढ़ाने लिये कभी-कभी जाते हैं और कहाँ तो हर

रोज़ और बहुत पुष्पों की वर्षा होती है। मालूम है? इसका कारण क्या? तो यही लक्ष्य रखो कि सर्व के स्नेह के पुष्प पात्र बनें। स्नेह कैसे मिलता है? एक-एक को अपना सहयोग देंगे तो सहयोग मिलेगा। और जितनों के यहाँ सहयोगी बनेंगे उतनों के स्नेह के पात्र बनेंगे, और ऐसा ही फिर विश्व के महाराजन् बनेंगे। इसलिये लक्ष्य बड़ा रखो।

आज एक भक्तिमार्ग का चित्र याद आ रहा है। आज देख भी रहे थे तो मुस्करा भी रहे थे। देख रहे थे अंगुली देने वाले तो हैं ना। अंगुली दी भी है वा देनी है? कहाँ तक अंगुली पहुंची है? अगर अंगुली देनी है तो इसका मतलब है जहाँ तक अंगुली पहुंची है वहाँ तक नहीं दी है। पहाड़ उठा नहीं है। क्यों, इतना भारी है क्या? इतनों की अंगुली भी मिल गई है फिर भी पहाड़ क्यों नहीं उठता? कल्प पहले का जो यादगार है वह सफल तब हुआ है जब सभी का संगठित रूप में बल मिला है, इसलिये थोड़ा उठता है फिर बैठ जाता है। हरेक अपनी-अपनी अंगुली लगा रहे हैं परन्तु अब आवश्यकता है संगठित रूप में। स्वयं की अंगुली दी है लेकिन अब संगठन में शक्ति तब भरेगी जब वह बल आयेगा। अब शक्ति दल की प्रत्यक्षता होनी है। सभी फूल तो बने हैं लेकिन अब गुलदस्ते में संगठित रूप में आना है। अभी कोई पुष्प कहाँ-कहाँ अपनी रंगत दिखा रहे हैं, कोई अपनी खुशबू दे रहा है, कोई अपना रूप दिखा रहा है। लेकिन रूप, रंग, खुशबू जब सब प्रकार की गुलदस्ते के रूप में आ जायेगी तब दुनिया के आगे प्रत्यक्ष होंगे। अब ऐसा प्लैन बनाओ जो संगठित रूप में कोई नवीनता दुनिया के आगे दिखाओ। एक-एक अलग होने के कारण मेहनत भी ज्यादा करनी पड़ती है। लेकिन संगठन में मेहनत कम सफलता जास्ती होगी। जब संगमयुग के संगठन को सफल बनायेंगे तब सर्विस की सफलता होगी। योग्यताएं सभी हैं लेकिन योजना तक रह जाती हैं। अब अपनी योग्यताओं से औरों को भी बाप के समीप लाने योग्य बनाओ।

यह जो ग्रुप है यह है आत्माओं के सम्बन्ध जुड़वाने की नींव डालने वाला। जैसी नींव डालेंगे वैसे ही उन्हीं की आगे जीवन बनेंगी। सभी बातों में जितना खुद मजबूत होंगे उतना अनेकों की नींव मजबूत डाल सकेंगे। जितनी अपने में सर्व क्वालिफिकेशन होंगी ऐसी ही क्वालिटी आयेगी। अगर अपने में क्वालिफिकेशन कम है तो क्वालिटी भी कम आयेगी, इसलिए ऐसे समझो कि हम सभी नींव डालने वाले हैं। अपनी क्वालिफिकेशन से ही क्वालिटी आयेगी। आपसमान तब बना सकेंगे जब बापदादा के गुणों की समानता अपने में लायेंगे। अच्छा—

वरदान:- एक की स्मृति द्वारा एकरस स्थिति बनाने वाले ऊंच पद के अधिकारी भव

एकरस स्थिति बनाने के लिए सदा एक की स्मृति में स्थित रहो। अगर एक के बजाए दूसरा कोई भी याद आया तो एकरस के बजाए बहुरस स्थिति हो जायेगी। जिस समय और कोई रस अकर्षित करता है, उसी समय यदि आपका अन्तिम समय आ जाए तो ऊंच पद नहीं मिल सकता, इसलिए हर सेकण्ड अटेन्शन रखो। सदैव एक का पाठ पक्का हो, एक बाप, एक ही संगम का समय है और एकरस स्थिति में रहना है तो ऊंच पद का अधिकार मिल जायेगा।

स्लोगन:-

शुद्ध संकल्पों का भोजन स्वीकार करने वाले ही सच्चे-सच्चे वैष्णव हैं।

टीचर्स भटठी के पहले ग्रुप में - प्राण अव्यक्त बापदादा का मधुर सन्देश (गुल्जार दादी)

आज बापदादा के पास आप सबका यादप्यार लेते हुए पहुंची तो आज क्या देखा - बापदादा आज एक लाइट की पहाड़ी पर खड़े थे और दृष्टि दे रहे थे। जैसे मैं पहुंची तो क्या देखा कि आप सभी भी इमर्ज हो गये और बापदादा हम सबके बीच ऐसे न्यारा और प्यारा लग रहा था जो देखने में ही आनंद आ रहा था। बाबा भी सब बच्चों को मीठी दृष्टि दे रहा था, दूर से ऐसे लगता था जैसे कोई भी फूल के बीच में बूर होता है और चारों ओर पत्ते होते हैं, ऐसे लाइट में चमकता हुआ अलौकिक बड़ा फूल दिखाई दे रहा था। बाबा के चेहरे से 3 लाइट की किरणें निकल रही थी - एक मस्तक से, दो नयनों से तीनों गोल्डन लाइट की किरणें थी, सबके ऊपर लाइट हाउस सदृश्य लाइट पड़ रही थी, दृश्य तो बहुत सुन्दर था, थोड़े समय के बाद बाबा बोले, बाबा आज यह दृश्य इसलिए दिखा रहे हैं कि दृश्य सदा सहज याद आता है। तीनों लाइट के अन्दर 3 लिखत थी:

1- एक में लिखा था सदा डबल ताजधारी रहना है। 2- लाइट स्वरूप बनना है। 3- सर्व को लाइट देनी है। बाबा बोले, यह तीनों बातें याद रहने से सदा कार्य करते हलचल में आते भी अचल स्थिति रहेगी क्योंकि आप सब विशेष निमित्त ग्रुप बापदादा की नजर में विशेष रत्न हैं। ब्राह्मण परिवार के सामने भी और विश्व के सामने भी एक एजैम्पुल हो, बापदादा जानते हैं कि अब भी बाप के कार्य में साथी हो और भविष्य में भी 21 जन्म में राज्य अधिकारी साथ में हो। हर एक बच्चा बाप के नयनों के नूर, दिलतख्ता नशीन गले का हार हो। बोलो, ऐसा नशा रहता है ना! अब बापदादा आप बच्चों से यही चाहता है कि आप सब ऐसे नेचुरल और सहज परिवर्तन का सैम्पुल स्वरूप बनो जो सब भी सहज परिवर्तन कर सकें क्योंकि परिवर्तन की मुख्य निशानी है **“निर्माणता”**, जो मन-वचन-कर्म तीनों में लानी है, जिससे वायुमण्डल चारों ओर का बहुत शक्तिशाली बन जाए, उसके लिए आज बापदादा यही चाहते हैं कि इस भट्टी में यह परिवर्तन करो कि किसी भी आत्मा प्रति दिल में संकल्प में कोई निगेटिव वायब्रेशन नहीं रखना है। सदा हर आत्मा प्रति कल्याण की भावना, परिवर्तन की भावना, शुभ भावना रखनी है, जब 5 तत्वों प्रति भी परिवर्तन की भावना रखते हो तो क्या अपने ब्राह्मण आत्मा प्रति शुभ भावना का, पॉजिटिव वायब्रेशन नहीं रख सकते। ऐसे नहीं कि यह है ही ऐसा, लेकिन उसके प्रति भी पॉजिटिव वायब्रेशन रखो क्योंकि वायब्रेशन से वायुमण्डल बनता है। चाहे वह रांग है लेकिन आप रांग को अपने दिल में धारण नहीं करो क्योंकि रांग राइट को समझना अलग चीज है, दिल में समाना अलग चीज है। समाना आता है तो क्या समाप्त करना नहीं आता! समझदार उसको कहा जाता है जिसको समझना और मिटाना भी आता है। तो मन और बुद्धि को उनसे फ्री करो तब ही एकाग्रता की शक्ति बढ़ेगी और ज्वालामुखी योग का प्रभाव वायुमण्डल में फैलेगा। जब भक्तों को आपके जड़ चित्र क्षमा करते तो आप चैतन्य देवता देवलव और लॉ के बैलेन्स सहित क्षमा कर परिवर्तन नहीं कर सकते हैं। इससे ही वायुमण्डल में पॉजिटिव वायब्रेशन से वायुमण्डल पॉजिटिव बना सकते हो। बोलो, परिवर्तन की शक्ति है ना।

बापदादा की तो इस ग्रुप में बहुत-बहुत आशाएँ हैं और बाप की आशाओं के चमकते सितारे हो ही। ऐसे कहते बापदादा ने सबको बहुत-बहुत याद दी और हमारी दादी जानकी को भी याद दी और बोले बच्ची ड्रामा के राज को जान साक्षी हो चुक्तू कर रही है और खुशी से चुक्तू कर रही है क्योंकि जानती है यह भी पिछला हिसाब चुक्तू हुआ, हल्का हुआ। खुद भी खुश रहती, औरों को भी खुशी में उड़ाती। ऐसे कहते दादी को बहुत-बहुत प्यार दिया और हमें भी दृष्टि दे साकार वतन में भेज दिया।

अच्छा - ओम् शान्ति।